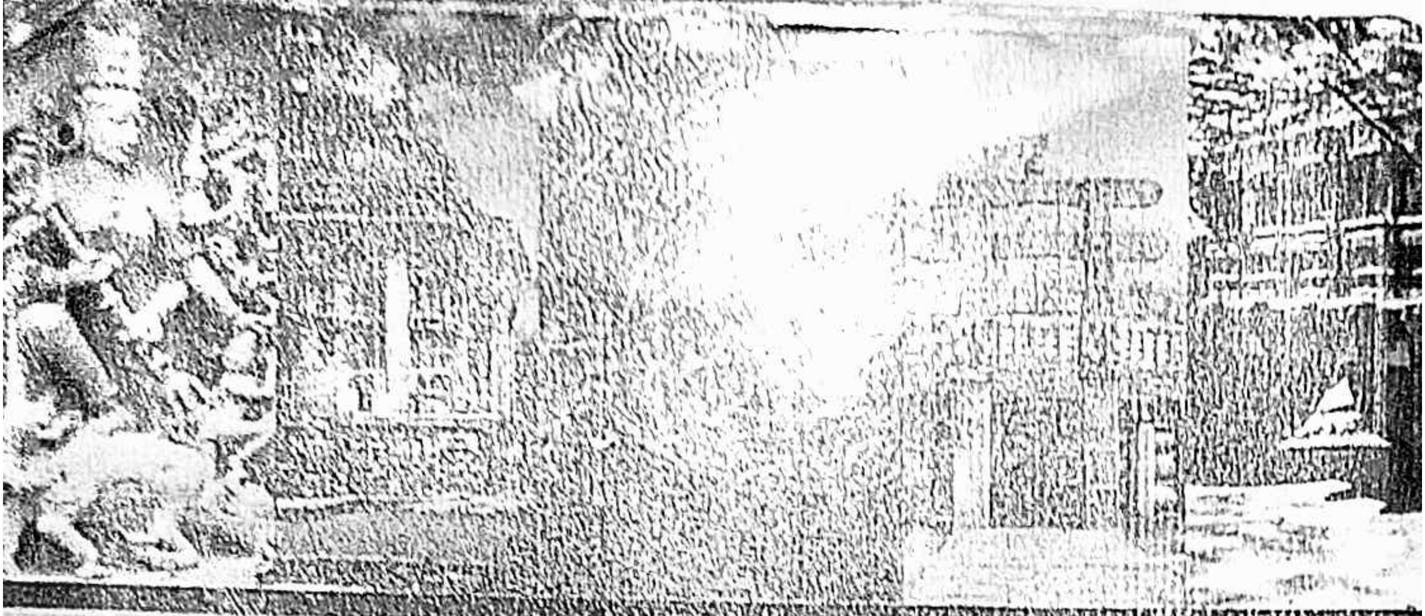

भारत

(विविध विमर्श)

संपादक
प्रसादराव जामि

भारत

(विविध विमर्श)

संपादक

प्रसादराव जामि

जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स
वी-508, गली नं.17, विजय पार्क,
दिल्ली-110053
मो. 08527460252, 09990236819
ईमेल: jtspublications@gmail.com

जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स, दिल्ली

भारत (विविध विमर्श)

संपादक

प्रसादराव जामि

वैधानिक चेतावनी

पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन- फोटोकॉपी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग के लिए लेखक/ संपादक/ प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है। पुस्तक में प्रकाशित शोध-पत्रों में निहित विचार तथा संदर्भों का संपूर्ण दायित्व स्वयं लेखकों का है। संपादक/ प्रकाशक इसके लिए उत्तरदायी नहीं है।

© सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण : २०२४
ISBN 978-81-19584-72-7

जे.टी.एस. पब्लिकेशन
बी-508 गली नं.17,विजय पार्क,दिल्ली -110053
मो. 08527460252,9990236819
ई मेल : jtspublications@gmail.com
ब्रांच ऑफिस : ए-9 नवीन इनक्लेव गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश, पिन -201102

मूल्य : १२०० रूपये
आवरण : प्रतिभा शर्मा, दिल्ली

मुद्रक : जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स, दिल्ली

संपादक की कलम से... ... ...

अत्र ते वर्णयिष्यामि वर्षम् भारत भारतम्।
प्रियं इन्द्रस्य देवस्य मनो: वैवस्वतस्य च।
पृथोश्च राजन् वैन्यस्य तथेक्ष्वाको: महात्मन:।
ययाते: अम्बरीषस्य मान्धातु: नहुषस्य च।
तथैव मुचुकुन्दस्य शिबे: औशीनरस्य च।
ऋषभस्य तथैलस्य नृगस्य नृपतेस्तथा।
अन्येषां च महाराज क्षत्रियाणां बलीयसाम्।
सर्वेषामेव राजेन्द्र प्रियं भारत भारतम्॥

भारत प्राचीन, विशाल, महान, लोकतांत्रिक राष्ट्र है। भारत आध्यात्मिकता और दर्शन की भूमि के रूप में जाना जाता है। भारत त्याग, शांति संदेश, सुख- समृद्धि का देश है। भारत के पूर्व में बंगालखाड़ी, पश्चिम में अरब सागर, उत्तर में हिमालय पर्वत श्रेणियां और दक्षिण में हिंदू महासागर है। भारत में विभिन्न जातियां, विभिन्न संस्कृति-सभ्यता, विभिन्न संप्रदाय, विभिन्न परंपरा की समृद्धि,विभिन्न रीति-रिवाज, विभिन्न भाषाएं-बोलियां, विभिन्न वेशभूषा, विभिन्न ख़ान-पान,विभिन्न पोशाक शैली, विभिन्न नृत्य-संगीत-शिक्षा-साहित्य-कला, विभिन्न विवाह की पद्धति और हर संभव चीज के कारण दुनियां भर के लोगों के लिए हमेशा आकर्षण केंद्र रहा है। भारत की संस्कृति अनोखी और यह दुनियां की सबसे पुरानी और महानतम सभ्यता में से एक है। भारत अपनी संस्कृति और परंपरा के लिए पूरी दुनियां में मशहूर देश है। भारतीय संस्कृति के महत्वपूर्ण घटक अच्छे शिष्टाचार, सभ्य संचार, अनुष्ठान, विश्वास, मूल्य आदि हैं। भिन्नता में एकता का दर्शन भारत में होता है। भारत भौगोलिक दृष्टि से विश्व का सातवां सबसे बड़ा देश है। जबकि जनसंख्या के दृष्टिकोण से दुनियां का सबसे बड़ा देश है। भारत की विविधता दुनियां के चमत्कारों में से एक बनाती है। भारत दुनियां का सबसे बड़ा लोकतंत्र है। आज मैं अत्यंत हर्ष और गर्व के साथ आपके समक्ष अपने दिल की बात प्रस्तुत करना चाहता हूं; आज

अनुक्रमाणिका

क्र.	लेख का नाम /लेखक	पेज
1.	**भारत** प्रसादराव जामि	13
2.	**पर्वों का देश भारत** सावित्री जामि	28
3.	**भारत छोड़ो आन्दोलन में महिलाओं की भूमिका** डॉ. सुरेश लाल श्रीवास्तव	35
4.	**भारत का आधुनिक इतिहास** (सन् 1930 ई. से सन् 1950 ई. तक) डॉ0 रामा नन्दन सिंह	38
5.	**अखंड भारत : परम वैभवशाली** रजनीश कुमार	50
6.	**वैदिक वाड्.मय में भारतीय दर्शन की महत्ता** डॉ. बेद प्रकाश तिवारी	57
7.	**भारतीय राष्ट्रवाद** डॉ. सुनील कुमार चतुर्वेदी	67
8.	**भारत की आज़ादी का अमृत महोत्सव** धनंजय कुमार गण	82
9.	**महिला सशक्तिकरण और बसावयुग** डॉ० मधुमालति जि एस,	89
10.	**भारत एक वैश्विक शक्ति** उमेश लिखीराम राठौर	92
11.	**भारतीय साहित्य की अवधारणा** डॉ. शेख शहेनाज अहेमद	94
12.	**भारत मे माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य के विकास मे शैक्षिक संस्थानो की भूमिका** मनोज कुमार यादव	101

11

भारतीय साहित्य की अवधारणा

डॉ. शेख शहेनाज अहेमद
हिंदी विभाग प्रमुख
हुतात्मा जयवंतराव पाटील महाविद्यालय,
हिमायतनगर जि.नांदेड-431802

मनुष्य विविध देशकाल में भाषा, साहित्य और संस्कृति का सृजन और विकास करता आया है जिसमें अनेक प्रकार की विविधताएँ, भिन्नताएँ और समानताएँ पाई जाती है। इन भिन्नताओं और समानाताओं का अध्ययन क्रमशः व्यतिरेकी अध्ययन और तुलनात्मक साहित्य की दिशा में प्रेरित करता है। मैथ्यु आर्नल्ड ने इसी आधार पर तुलनात्मक विश्व साहित्य की संकल्पना प्रस्तुत की थी। उनके अनुसार आलोचक को विश्व साहित्य में जो कुछ भी श्रेष्ठतम और महनीय है उसका अध्ययन, मनन और प्रचार करना चाहिए ताकि प्राणवान और सत्य विचारों की धारा प्रवाहित की जा सके। ऐसा करने से विभिन्न भाषाओं के साहित्य में विद्यमान समान मूल्यों को खोजा जा सकता है।

भारतीय साहित्य का प्रारंभिक स्वरूप् 1500-1200 ईसा पूर्व का है। इसके अतिरिक्त, संस्कृत, साहित्य में ऋग्वेद भी शामिल है, जो साहित्य का एक संग्रह है। इसके अलावा तीन अन्य वेद भी मौजूद है। भारतीय साहित्य में रामायण, महाभारत आदि जैसे महाकाव्य भी शामिल है। ये हिंदू संस्कृति के कुछ पवित्र ग्रंथ है। हिंदू साहित्य की सूची कभी खत्म न होने वाली सूची है। हालाकि, समय बीतने के साथ-साथ विभिन्न भाषाओं का साहित्य भी अस्तिव में आया। जार्ज विल्हेम फ्रेडरिक हेगेल के कथनानुसार, ''यह शुरूआत में हर किसी को भारतीय साहित्य के खजाने से परिचित होने के लिए प्रेरित करता है, यह भूमि बौध्दिक उत्पादों और विचार के गहनतम क्रम से समृध्द है।''1

भारतीय साहित्य यकीनन दुनिया के सबसे पुराने और समृध्द साहित्य में से एक है। इसके अतिरिक्त, भारतीय साहित्य की सबसे पुरानी कृतियों में ज्ञान का मौखिक प्रसारण शामिल है। भारतीय विशाल विविधता वाला देश है और विभिन्न सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के लोगों को समायोजित करता है। 22 से अधिक अधिकारिक

भाषाओं के साथ-साथ, देश ने सभी भाषाओं से साहित्य का उत्पादन किया है। हाँलाकि साहित्य के प्रारंभिक रूप् में प्रमुख रूप् से संस्कृत भाषा के ग्रंथ शामिल है। इसके अतिरिक्त हिंदू लेखन और ग्रंथों की परंपराएँ देश के साहित्य पर हावी होती जा रही है।

भारतीय साहित्य के समझने के लिए इसकी एकता और अखंडता को समझना जरूरी है। भारत अनेक भाषाओं वाला विशाल देश है। उत्तर पश्चिम में पंजाबी, हिंदी व उर्दु तो मध्य भारत में मराठी, हिंदी, गुजराती, दक्षिण में तमिल, तेलुगु, कन्नड और मल्यालम के अलावा कश्मीरी, कोंकणी, बंगाली, सिंधी, डोंगरी, असमी, उड़िया आदि भाषाएँ अपनी विवेश पहचान रखती है। डॉ.नगेंद्र ने भारतीय साहित्य की भूमिका में लिखा है-''यदि आधुनिक भारतीय भाषाओं के समग्र वांग्मय का संचयन किया जाए तो किसी भी दृष्टि से युरोपीय साहित्य से कम नही होगा। वैदिक संस्कृत, लौकिक संस्कृत, पाली, प्राकृत एवं अपभ्रंश साहित्य का समावेश करने पर इसका अनंत विस्तार कल्पना की सीमा को पार कर जाता है।''2

साहित्य मनुष्य की आंतरिक अनुभूतियों और संवेदनाओं का अभिव्यक्त रूप होता है। यह माना जाता है कि मानव की आंतरिक भावनाएँ समान होती है। उसकी महंसूस करने तथा भाव प्रकट करने की शक्ति भी सार्वभौमिक है। शोक, हर्ष, घृणा, क्रोध प्रेम और वात्सल्य जैसे अनेक भाव विश्व मानव में समान पाए जाते है, जिसके परिणामस्वरूप् साहित्य का मूलभूत ढाँचा सभी भाषाओं में एक-सा-ही दिखाई देता है। यदि भारत की बात की जाए तो यह ध्यान में रखना होगा कि यह देश बहुभाषिक और बहुसांस्कृतिक देश है। अर्थात, भारत की अलग-अलग भाषाओं में जो साहित्य लिखा गया है या लिखा जा रहा है उसमें थोड़ी-बहुत भिन्नता के साथ अधिकतर एकता या समानता की स्थिति दिखाई पड़ती है। विभिन्न भारतीय भाषाओं के साहित्य की यह एकता या समानता ही भारतीय साहित्य की अवधारणा का केंद्रबिंदू है। इसी के साथ पांडेय शशिभूषण शीतांशु का यह मत भी जोड़ले तो बात और भी परिपूर्ण हो जाएगी कि, ''भारतीय साहित्य का अर्थ हुआ आत्मज्ञान को सृजित करने, प्रस्तुत करने और प्रदान करने वाला साहित्य।''3

ज्ञान का अपार भंडार हिंद महासागर से भी गहरा भारत के भौगोलिक विस्तार से भी व्यापक, हिमालय के शिखरों से भी उँचा और ब्रम्हा की कल्पना से भी अधिक सुदश्र। भारत की प्रत्येक भाषा के साहित्य का अपना स्वतंत्र और प्रखर

वैशिष्ट्य है, जो अपने प्रदेश के व्यक्तित्व से मुद्रांकित है। पंजाबी और सिंधी, इधर हिंदी और उर्दू की प्रदेश-सीमाएँ कितनी मिली हुई है, किंतु उनके अपने-अपने साहित्य का वैशिष्ट्य कितना प्रखर है। इसी प्रकार गुजराती और मराठी का जन-जीवन परस्पर ओतप्रोत है, दक्षिण भाषाओं का उद्गम एक हैः सभी द्रविड परिवार की विभूतियाँ हैं, यही बात बंगला, असमिया और उड़ियाके विषयमें सत्य है। बंगाल के गहरे प्रभाव को पचाकर असमिया और उड़िया अपने स्वतंत्र अस्तित्व को बनाए हुए है। इन सभी साहित्यों में अपनी-अपनी विशिष्ट विभूतियाँ है। मल्यालम का संदेश काव्य तमिल का 'संगम-साहित्य', तेलुगु का 'अवधान साहित्य' मराठी के 'पोवाडे' गुजराती के 'आख्यान' बंगला का 'मंगल-काव्य',पंजाबी का 'रम्याख्यान' और 'वीरगीत' असमिया के 'बरगीत', उर्दू की गजल और हिंदी का रीतिकाव्य तथा छायावाद आदि अपने-अपने भाषा-साहित्य के वैशिष्ट्य के उज्ज्वल प्रमाण है।

जिस प्रकार अनेक धर्मा, विचार-धाराओं और जीवन-प्रणालियों के रहते हुए भी भारतीय संस्कृति की एकता असंदिग्ध है, इसी प्रकार इसी कारण से अनेक भाषाओं और अभिव्यंजना पद्धतियों के रहते हुए भी भारतीय साहित्य की मूलभूत एकता का अनुसंधान भी सहज संभव है। भारतीय साहित्य का प्राचुर्य और वैविध्य तो अपूर्व है ही, उसकी मौलिकता एकता और भी रमणीय है। ''भारतीय साहित्य भारतीय जन गण की तरह विविधता और एकता के परस्पर सूत्रों में बनी हुई एक सघन इकाई है विभिन्न धाराओं व्यक्तित्वों और विचार सरणियों के लोक तांत्रिक अनुगुंफन से ही वह वजूद में आती है।''4

भारतीय साहित्य का क्षेत्र बहुत विस्तृत और व्यापक है। भारत वर्ष में अनेक भाषाएँ व्याप्त है। भारतीय संविधान में शामिल हर भाषा की विपूल साहित्य राशी भारतीय साहित्य नाम से जानी जाती है। प्रो.दिलीप सिंह के अनुसारन,''भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में जिन 22 भाषाओं और बोलियों का उल्लेख है उनका साहित्य अत्यंत संवृध्द है और यदि ऐतिहासिक दृष्टिसे देखा जाए तो इन सभी भाषाओं में साहित्यिक धाराएँ लगभग समांतर रूप में प्रवाहीत मिलती है। इसके साथ ही इन सभी भाषाओं का राष्ट्रीय चेतना और आनेवाले परिवर्तनों के साथ एकसा संबंध रहा है तथा ये सभी राष्ट्रीय स्तर हो रहे परिवर्तनों से एक-सा प्रभावित रही है। कहने का तात्पर्य यह है कि ऐतिहासिक,

सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से भारत की सभी भाषाएँ और इनका साहित्य भी एकता से सूत्र में बंधा हुआ प्रतीत होता है इसलिए भारत की इन भिन्न, भाषाओं में लिखे गए साहित्य को भारतीय साहित्य कहा गया है।''5 यहाँ यह जानना आवश्यक है कि साहित्यिक धारा, विचारधाराएँ, प्रकृतियाँ और सामाजिक सरोकार के धरातल पर भारतीय साहित्य में जो समानताएँ मिलती है उन्हें 'भारतीयता' के तत्व या घटक कहाँ जा सकता है।

जन्मकाल की दृष्टि से लगभग सभी भारतीय भाषाओं का काल प्रायः समान ही है। इसी का ग्यारहवी शती में तेलुगु के प्राचीनतम कवि नन्नय का अविर्भाव हुआ। कन्नड का प्रथम ग्रंथ है 'कविराजमार्ग' जिसके लेखक राष्ट्रकूट वंश के नृपतुंग है। मल्यालम की सर्वप्रथम कृति 'रामचरितम' है लेकिन उसमें भाषा की समस्याएँ है। गुजराती और मराठी का अविर्भाव काल एक ही है। गुजराती का आदिग्रंथ शालिभद्र सूरी द्वारा रचित 'भारतेश्वरबाहुबलिरास' सन 1185 में रचा हुआ है। असमिया साहित्य की सबसे प्राचीन रचनाएँ 'प्रल्हादचरित्र' तथा 'हरिगौरीसंवाद' हेम सरस्वती द्वारा रची गयी है। उड़िया भाषा में भी तेरहवी शती में व्यंग्यात्मक काव्य और लोकगीतों के दर्शन होने लगते है। उड़िया के व्यास सारलादास का अविर्भाव चौदवी शती में होता है। पंजाबी और हिंदी में ग्यारहवीं शती से साहित्य व्यवस्थित रूप में उपलब्ध होने लगता है। तमिल संस्कृत के समान प्राचीन है। और उर्दु का वास्तविक आरंभ पंधरवीं शती के पूर्व है। उर्दू का उद्भव अमीर खूसरों और बाबा फरीद की रचनाओं से मानने लगे है। इस प्रकार भारतीय भाषाओं के अधिकांश सात्यि का विकास क्रम लगभग एक-साही है। सभी प्रायः समकालीन चार चरणों में विभिन्न हैं।

भारतीय साहित्य की यह अंतर्निहित भारतीयता भारत की संस्कृति का प्रतिबिंब है। भारत की सांस्कृतिक विभिन्नता में विद्यमान एकता को महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू, सर्वपल्ली राधाकृष्णन और डॉ.राजेंद्र प्रसाद आदि ने बड़ी सूक्ष्मता से पहचाना है। ऐसे देखने पर हमें भारत के विभिन्न-भिन्न प्रांतों और समुदायों की संस्कृति में कुछ भेद दिखाई देते है। लेकिन यदि गहराई से देखे तो संस्कृति के मूलाधार भारत के सभी समुदायों में समानता लिए हुए दिखाई देते है। बाहरी संस्कृतियाँ आकर भारत की मूल संस्कृति में घुलने मिलने लगी और मिली-जुली संस्कृति का अनूठामिश्रण तैयार हुआ जिसका प्रभाव सभी भारतीय भाषाओं

और उनके साहित्य भारतीय भाषाओं के विकास के प्रथम चरण में भिन्न-भिन्न संप्रदायों का प्रभाव विद्यमान था। इनके बाद इनके उत्तराधिकारी संत-संप्रदायों और नवागत मुसलमानों के सूफी-संत का प्रसार देश के भिन्न-भिन्न भागों में होने लगा। संत-संप्रदाय वेदांत दर्शन से प्रभावित थे और निर्गुण भक्ति की साधना तथा प्रचार करते थे। सूफी धर्म में भी निराकार ब्रम्हा की ही उपासना थी, किंतु उसका माध्यम उत्कट प्रेमानुभूति था। सूफी-संतो का यद्यपि उत्तर-पश्चिम में अधिक प्रभुत्व था, फिर भी दक्षिण के बीजापुर और गोलकुंडा राज्यों में भी इनके अनेक केंद्र थे और वहाँ भी अनेक प्रसिध्द सूफी संत हुए। तद्नंतर वैष्णव आंदोलन सारे देश मे व्याप्त हो गया। राम और कृष्ण की भक्ति की अनेक पद्धतियाँ और रचनाएँ देश भर में गुंजारीत हो उठी। उधर मुस्लिम संस्कृति और सभ्यता का प्रभाव भी निरंतर बढ़ रहा था। ईरानी संस्कृति के अनेक आकर्षक तत्व भारतीय जीवन में बड़े वेग से घुल-मिल रहे थे और दरबारी या नागर संस्कृति का अविर्भाव हो रहा था। कालांतर में यह संस्कृति आर्थिक प्रभाव के कारण अपना प्रसादमय प्रभाव खो बैठी। उत्कर्ष एवं आनंद की जगह रूग्ण विलासिताने ले ली। उसी समय पश्चिम के व्यापारियों ने अपने आगमन के साथ पश्चिमी शिक्षा-संस्कार को लेकर आए जो सारे भारत में दल के रूप में प्रवेश किया। उन्नीसवीं शताब्दी आते-आते अँग्रेजों ने सारे देश पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर दिया। बड़ी योजनाके साथ यह शासकवर्ग शिक्षा, संस्कृति के माध्यम से प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप में धर्म का प्रचार करने लगे। यहीं से आधुनिक भारत ने जन्म लिया।

भारतीय साहित्य के स्वरूप निर्धारण में विभिन्न भाषाओं के साहित्य की परंपरा के अध्ययन का बड़ा महत्व है। जैसे कि जब हम सूरदास के काव्य का अध्ययन करते है तो पीछे जाकर उस परंपरा को भी देखते है जो मध्यकाल में एक व्यापक प्रवृत्ति के रूप् में पूरे भारत को उसकी सभी भाषाओं को प्रभावित किए हुए थी। इसी प्रकार मध्यकालीन रामकथा की परंपरा को समझने के लिए वाल्मिकी की 'रामायण', कालिदास के 'रघुवंश' और भवभूति के 'उत्तररामचरित' को देखना जरूरी है। आधुनिक काल में भी जो साहित्य लेखन हुआ है या हो रहा है वह सारी कृतियाँ प्राचीन वाङमय से ही प्रेरणा प्राप्त करती है। यही कारण है कि भारतीय साहित्य के आकार ग्रंथों के रूप में 'रामायण', 'महाभारत' और 'कथा-सरित्सागर'

का समान रूप से उल्लेख किया जाता है। हम देखते है कि नवजागरण काल में सभी भारतीय भाषाओं के साहित्य में एक जैसी आधुनिक चेतना का प्रसार हुआ।

भारत की भाषाओं का परिवार यद्यपि एक नहीं है, फिर भी उनका साहित्यिक आधारभूमि एक ही है। रामायण, महाभारत, पुराण, भागवत, संस्कृत का अभिजात्य साहित्य-अर्थात कालिदास भवभूति, बाणभट्ट, श्रीहर्ष, अमरूक और जयदेव आदि की अमर कृतियाँ, पालि, प्राकृत तथा अपभ्रंश में लिखित बौध्द, जैन तथा अन्य धर्मों का साहित्य की समस्त भाषाओं को उत्तराधिकार में मिला। शास्त्र के अंतर्गत उपनिषद, स्मृतियाँ काव्यशास्त्र, नाटयशास्त्र, हवन्यालोक, काव्यप्रकाश, साहित्यदर्पण, रसगंगाधर आदि की विचार विभूति का उपयोग भी सभी ने निरंतर किया है।

वास्तव में आधुनिक भारतीय भाषाओं के ये अक्षय-प्रेरणा-स्त्रोत है जो प्रायः सभी को समान रूप् से प्रभावित करते रहे है। इनका प्रभाव निश्चय ही अत्यंत समन्वयकारी रहा है। भारतीय साहित्य अभिव्यक्ति में भिन्नता रखते हुए भी, भाषागत विविधता के बावजूद अखंड भावात्मक एकता और शिल्पगत एकरूपता रखता है। भारतीय को समग्रता में ग्रहण करने पर ''इस अंतः साहित्यिक शोध-प्रणाली के द्वारा अनेक लुप्त कड़ियाँ अनायास ही मिल जाएँगी, अगणित जिज्ञासाओं का सहज ही अंत हो जाएगा। साथही भारतीय चिंताधारा एवं रागात्मक चेतना की एकता का उद्घाटन हो सकेगा।''5

भारत,एक देश के रूप में साहित्य जगतमें एक अभिन्न और महत्वपूर्ण योगदान निभाता है। इसके अतिरिक्त, बंगाली लेखक रवींद्रनाथ टागौर साहित्य के क्षेत्र में नोबेल पुरस्कार जीतनेवाले पहले भारतीय है। उन्हें 1920 में उनकी 'गीतांजलि' के लिए पुरस्कार मिला। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि हाल के दिनों में, अधिक महिलाओं को इस क्षेत्र में आते देखा जा सकता है। इनमें से कुछ है 'गॉड ऑफ थिंग्स' की लेखिका अरूंधति रॉय, झुम्पा लाहिड़ी और शोभा डे। इसके अतिरिक्त, वे सभी पुरस्कार के लिए बुकर पुरस्कार विजेता है, झुम्पा लाहिड़ी पुलित्जर पुरस्कार विजेता है।

भारतीय साहित्य वस्तुतः साहित्य के माध्यम से इसी साम्पसिक संस्कृति अथवा भारतीयता की खोज करता है। हमारी एकता विविधता पर आधारित है। हमारे साहित्य की अवधारणा जनता तथा साहित्य के संपर्क की पहचान पर

आधारित है। भारतीय साहित्य को भाषा, भौगोलिक क्षेत्र, राजनीतिक एकता साथ-साथ इस देश की जनता के आधार पर पहचाना जाता है। समाजि सांस्कृतिक क्षेत्र का निर्माण होता है। और वह भारतीय साहित्य के परस्पर संबंधो निर्भर रहता है। भारतीय साहित्य की एकता भाषागत एकता नही विचारों अ भावनाओं की एकता है। प्रेमचंद ने हिंदू और उर्दू में अपने विचार अधिव्यंजित कि है। स्पष्ट है, भारतीय साहित्य भारतीय जनता की संपूर्ण अभिव्यक्ति का इतिहास यह साहित्यिक परंपरा की एकता और विविधता का इतिहास है। भारतीय साहि में राष्ट्र का स्वर उध्दारित होता है। भारतीय साहित्य में प्रांतीय तथा जाति गतिविधियों को केंद्र में रखा जाता है। संविधान सम्मत भारतीय भाषाओं में लि साहित्य 'भारतीय साहित्य' है।

संदर्भ :-

1) शोध प्रविधि - डॉ. दिलीप सिंह एवं डॉ. ऋषभ देव शर्मा.

2) भारतीय साहित्य - डॉ. नगेंद्र - भूमिका - पृ.11.

3) तुलनात्मक साहित्य की भूमिका - डॉ. इंद्रनाथ चौधुरी.

4) भारतीय साहित्य स्थापनाएँ एवं प्रस्तावनाएँ - के. सचिदानंद, फ्लैप पै.

5) आलोचना के सिध्दांत - डॉ. शिवदान सिंह चौहान.

6) भारतीय साहित्य - डॉ.नगेंद्र - भूमिका - पृ.12.

7) टाइम्स ऑफ इंडिया - 24 नवम्बर - 2008.

8) टाइम्स ऑफ इंडिया - 5 दिसंबर - 2012.

20) रामचरितमानस - चित्रकुट प्रसंग - भरत मिलाप

21) रामचरितमानस - अरण्यकांड - चौ.1